टुसू लोकपर्व की महत्ता, निरन्तरता एवं परिवर्तन: पाँचपरगना क्षेत्र के विशेष संदर्भ में

पीएच.डी. रजिस्ट्रेशन हेतु,राँची विश्वविधालय, राँची को प्रस्तुत शोध प्रारुप

स्नातकोत्तर मानवशास्त्र विभाग, राँची विश्वविधालय, राँची, 2024

शोध निर्देशक

डॉ. मनीष चन्द्र टुडू
असिस्टेंट प्रोफेसर
राम लखन सिंह यादव महाविधालय, राँची।

शोधार्थी

बसंती महतो
स्नातकोत्तर मानवशास्त्र विभाग
राँची विश्वविधालय, राँची।

टुसू लोकपर्व की महत्ता, निरन्तरता एवं परिवर्तन: पाँचपरगना क्षेत्र के विशेष संदर्भ में

भूमिका

लोकपर्व लोकसाहित्य का अभिन्न अंग है। लोकसाहित्य वैसे साहित्य को कहते हैं जिसका कोई लिखित तथ्य मौजूद नहीं है। यह मौखिक परम्परा पर आधारित है। मौखिक रूप से सांस्कृतिक तत्वों का एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी हस्तांतरित होती है । हम कह सकते है कि लोकसाहित्य मौखिक साहित्य का भण्डार है, जिसमें लोककथा, मिथक, किवदंतियाँ, लोकगीत, पहेलियाँ, कहावतें, लोक भाषण, कहानियाँ लोककला, लोकनृत्य शामिल है। लोकसाहित्य का अंग्रेजी रूपान्तरण *Folklore* है।

Folk शब्द की उत्पति एंग्लो-सेक्शन शब्द फलोर से हुई है। छोटे व विशिष्ट समुदाय एवं उनके प्रत्यक्ष अन्तःव्यक्तिक सम्बन्ध व जीवनशैली को लोकसंस्कृति कहते हैं। इस अवधारणा का सर्वप्रथम प्रयोग प्रो० रेडफील्ड (1930) ने मैक्सिको के युकातन लोगों के अध्ययन में किया। जिसमें उन्होंने लोक संस्कृति को नगरीय जीवन के प्रतिकूल एक विशिष्ट संस्कृति के रूप में प्रदर्शित किया है। ऐसे समाजों में मानवीय सम्बन्धों का आधार मुख्यतःपारस्पारिकता, नातेदारी या बंधुत्व होता है।

Folklore शब्द की रचना सन् 1846 में William John Thomas द्वारा दी गई। यह शब्द 1787 में जर्मन भाषा में प्रयोग किये गए शब्द *Walkkundi* (वॉककुंदे) का अंग्रेजी समानार्थक शब्द है। लोकसंकृति प्राचीन मानव की मनोवैज्ञानिक अभिव्यक्ति है। मानव से सम्बन्धित सभी सांस्कृतिक तत्व लोक साहित्य का अभिन्न अंग है।

निरन्तरता शब्द का अर्थ प्रक्रिया होता है। उत्पति से लेकर अब तक सांस्कृतिक तत्व प्रक्रिया कर रहे हैं हम उसे निरन्तरता कहते है। रोबर्ट रेडफील्ड की पुस्तक *स्ट्रक्चर एंड फंक्शन इन प्रीमिटिव सोसाईटी* (1952) में संरचनात्मक निरन्तरता की व्याख्या की गई है। इनके अनुसार संरचना के मौलिक इकाई परिवार, वंश, गोत्र, जाति, जनजाति निरन्तर कार्य करते है। इस तरह संरचनात्मक निरन्तरता सदैव बनी रहती है।

मार्गरेट मीड ने अपनी पुस्तक *कंट्युनिटि इस कल्चरल ईवोल्यूशन* (1964) में सांस्कृतिक उदविकास में निरन्तरता को दर्शाने के लिए नई दृष्टिकोण पिता व संतान के पीढ़ी के बीच तुलनात्मक अध्ययन पर आधारित है। दो पीढ़ी में होने वाले परिवर्तनव निरन्तरता का आधार सांस्कृतिक उदविकास को माना है।

मार्गरेट मीड ने अपनी पुस्तक *एंथ्रोपोलोजी स्टडी ऑफ मेन एंड सिविलाईजेशन* (1881) में संस्कृति की ऐतिहासिक निरन्तरता पर प्रकाश डाला है। विभिन्न प्रकार के भौतिक एवं अभौतिक अवशेषों का एकरेखीय क्रम में तुलना करके विचार व्यक्त किया है कि मानव जातीय विकास की तीन प्रमुख अवस्थाएँ हैं - आरण्यावस्था, असभ्यावस्था तथा सभ्यावस्था। उन्होंने इन ऐतिहासिक अवस्थाओं को ऐतिहासिक प्रक्रियाओं को संचालित करने वाला नियम नहीं बतलाया, वरन उन्होंने अनुभाविक सामान्यीकरण (Empirical Generalisation) पर विशेष रूप से प्रकाश डाला है। इसके आधार पर Ethnographic संस्कृति की निरन्तरता एवं परिवर्तन को समझने का प्रयास करता है।

सांस्कृतिक परिवर्तनकिसी भी सांस्कृतिक तत्व में होने वाले बदलाव संशोधन या परिवर्द्धन को कहा जाता है। यह परिवर्तन प्रवसन, खोज, संस्कृति- संक्रमण तथा सांस्कृतिक सम्पर्क से हो सकते हैं। रोबर्ट रेडफिल्ड की पुस्तक *फॉक कल्चर ऑफ युकटाम* (1941) में इन्होंने चार विभिन्न समाजों का तुलनात्मक अध्ययन किया।

इन्होंने तुलनात्मक अध्ययन के द्वारा लोक नगरीय सातत्य (Folk Urban Continum) को जानने का प्रयास किया। लोक समाज से नगरीय समाज का निर्माण निरन्तरता एवं परिवर्तन को दर्शाता है।

एम. एन. श्रीनिवास की पुस्तक *सोशल चेंज इन मॉडर्न इंडिया* (1966) में चार अवधारणाओं के माध्यम से परिवर्तन को समझने का प्रयास किया है। संस्कृतिकरण, पश्चिमीकरण, प्रबल जाति तथा धर्मनिरपेक्षीकरण मैलिनोवस्की की पुस्तक *डायनेमिक्स ऑफ कल्चर चेंज* (1955) में अफ्रीका, प्रजातीय समूहों में धर्म प्रचारक, व्यापारी, प्रशासन को परिवर्तन का माध्यम बतलाया। यह समाज गतिशील रहा है। सांस्कृतिक परिवर्तन को सांस्कृतिक तत्वों क्रियाओं के साथ पारस्परिक क्रिया करना पड़ता है।

जूलियन स्टीवर्ड ने सांस्कृतिक पारिस्थितिकी की अवधारणा का प्रतिपादन किया था। सांस्कृतिक पारिस्थितिकी प्रकृति एवं संस्कृति के बीच की अंत: सम्बन्धों की व्याख्या करता है। सांस्कृतिक पारिस्थितिकी की अवधारणा का आधार *संस्कृति क्षेत्र* (Culture area) है। क्रोबर तथा क्लार्क विसलर द्वारा प्रतिपादित अवधारणा *कल्चर एरिया* यह कहता है कि निश्चित भूभाग में निवास करने वाला मानव जाति का उस क्षेत्र के विशेष पर्यावरण के साथ अनुकूलन बनाना पड़ता है। संस्कृति का पर्यावरण के साथ अनुकूलन ही सांस्कृतिक पारिस्थितिक है। मेरा यह शोध विषय विशेष रूप से सांस्कृतिक पारिस्थितिकी के अन्तर्गत टुसू पर्व एवं पर्यावरण के बीच अंतःक्रिया का परीक्षण पर आधारित होगा। इसके अन्तर्गत यह जानने का प्रयास किया जाएगा कि किस प्रकार टुसू पर्व पर्यावरण को अपने अनुकूल बनाती है तथा किस प्रकार पर्यावरण टुसू पर्व को अपने अनुकूल बनाता है। इस प्रकार इस शोध कार्य से यह जानने का प्रयास किया जाएगा कि टुसू पर्व एवं पर्यावरण दोनों एक-दूसरे को किस प्रकार प्रभावित करते हैं तथा टुसू पर्व व पर्यावरण के अंत: सम्बन्धों को जानने का प्रयास किया जाएगा।

पाँचपरगना क्षेत्र भारत देश के 28वें राज्य के रूप में 15 नवम्बर 2000 को स्थापित झारखण्ड राज्य की राजधानी राँची के पूर्वी भाग में है। पाँचपरगना के नाम से ही स्पष्ट होता है कि ''पाँच परगनों का समूह'' पाँचपरगना क्षेत्र के अन्तर्गत सिल्ली, बुण्डु, बारेन्दा, राहे और तमाड़ आते हैं। पाँचपरगनिया भाषा के विद्वान राजकिशोर सिंह ने अपनी रचना ''सिबुबारात'' महाकाव्य में इन क्षेत्रों की व्याख्या की है,अर्थात सि-सिल्ली, बु-बुण्डु, बा-बारेन्दा, रा-राहे, त-तमाड़'। पाँचपरगना क्षेत्र के पूर्व में पुरूलिया बंगाल, पश्चिम में राँची, उतर में धनबाद व बोकारो और दक्षिण में उड़ीसा राज्य स्थित है। पाँचपरगना क्षेत्र किसी विशेष समुदाय का निवास स्थान नहीं है बल्कि कई जाति, जनजाति, समुदाय के लोग निवास करते है। इन सभी समुदायों की अपनी विशेष भाषा होने के बावजुद सभी आपस में सम्पर्कीय भाषा के रूप में पंचपरगनिया भाषा का प्रयोग करते हैं। पंचपरगनिया भाषा एक क्षेत्रीय भाषा है, जो केवल पाँचपरगना क्षेत्र में व्यवहार में लाया जाता है। इस भाषा में उड़िया, बंगला, नागपुरी, खोरठा, कुड़माली तथा छतीसगढ़ी का प्रभाव देखने को मिलता है।

संस्कृति किसी भी समाज की दर्पण होती है। संस्कृति के माध्यम से हम किसी भी समाज की रीति-रिवाज, ज्ञान, परम्परा, कानून का आंकलन कर सकते है। इस क्षेत्र में ऐसी मान्यता है कि साल के बारह महीने में कुल तेरह पर्व-त्योहार मनाया जाता है। प्रकृति पूजक होने के कारण सभी पर्व त्योहार प्राकृतिक पर आधारित होते हैं। यह क्षेत्र विशेष रूप से कृषि पर आधारित क्षेत्र है। मुख्य रूप से धान की खेती की जाती है। जंगल के आस-पास रहने वाले लोग जंगल उत्पादों का प्रयोग करते है। इनके जीवन में पर्व त्योहारों का महत्वूर्ण स्थान है। कृषि आधारित जीवन से संबंधित पर्व की शुरूआत आखाइन जातरा से होकर टुसू पर्व में अन्त होता है। वर्ष भर पर्व

त्योहार विशेष रूप से खेती से संबंधित होते है। आखाइन जातरा, रोहिणी पर्व, चैत्र पर्व, रोपणी, सोहराय, बुरू, टुसू थापना व टुसू पर्व कृषि आधारित पर्व है।

यह क्षेत्र कृषि प्रधान है जिसके कारण अधिकांशत: पर्व कृषि आधारित है। चैत्र के महीने में नवाखानी मनाया जाता है तथा धान बुनाई से संबंधित रोहिणी पर्व मनाया जाता है। पारम्परिक विधि विधान से धान पुन: (धान बुआई) की पर्व मनाया जाता है। धान मापने के सभी उपकरणों की विशेष पूजा की जाती है। रोपणी पर्व धान रोपने के अवसर पर मनाया जाता है, लोकगीत व पारम्परिक रीति-रिवाज के साथ धान रोपने का कार्य की शुरूआत की जाती है। करमा व जीतिया पर्व के अवसर पर जिस डाली की पूजा की जाती है, पूजा पश्चात् अच्छी फसल की कामना के उद्देश्य से खेतों के बीच में लगाया जाता है। धान पकने के पश्चात् धान कटाई के अवसर पर महिलाएँ लोकगीत गाती हैं व पारम्परिक विधि द्वारा धान कटाई की शुरूआत करती है। अगहन संक्राति के अवसर पर खेतो में विशेष धान का गुच्छा जिसे ये अपनी स्थानीय भाषा में *दिनिमाँय* कहते है उसे परम्परागत रीति -रिवाज से खेतो से लाकर घर मे स्थापित करते है इसे “टुसू थापना” कहा जाता है। इसी दिन से टुसू पर्व की शुरूआत होती है।

अगहन संक्रांति से लेकर पूस/मकर संक्रांति तक स्थापित टुसू की विशेष पूजा-अर्चना की जाती है। मकर संक्राति के बाद आखाइन जातरा मनाया जाता है जिसमें सभी कृषि उपकरणों की पूजा की जाती है तथा लोग खेत में जाकर हल चलाते हैं। एक महीने टुसू की विशेष पूजा करने के पश्चात् मकर सक्रांति के दिन उसे विधि-विधान से नदी/तालाब में विसर्जन करके विदाई दी जाती है। उसके दूसरे दिन से टुसू मेला का आयोजन किया जाता है। यह मेला पूरे एक महीने तक मनाया जाता है। मेला का आयोजन टांड़, पहाड़ या नदी के किनारे पर किया जाता है। मेला की शुरूआत बारेन्दा स्थित सतीघाट मेला से होता है तथा मेला का अन्त एक माह पश्चात् घुरती सतीघाट मेला से हाता है। टुसू पर्व एक पर्व नहीं है बल्कि इस क्षेत्र के लोगों के जीवन का दर्पण है। इनकी कला संस्कृति की झलकियाँ प्रस्तुत करती हैं। चूँकि यह क्षेत्र कृषि प्रधान क्षेत्र है, मुख्य रूप से धान की विशेष कृषि की जाती है। यह पर्व कृषि आधारित है। यह पर्व सामाजिक-सांस्कृतिक, आर्थिक, धार्मिक महत्व से परिपूर्ण है।

शोध विषय की अद्यतन स्थिति

टुसू लोकपर्व पाँचपरगाना क्षेत्र के विभिन्न समुदायों का सांस्कृतिक दर्पण है। यक लोकपर्व लोगों के लगभग सभी आयामों से जुड़ी हुई है। इसका सम्बंध सामाजिक-सांस्कृतिक, आर्थिक तथा धार्मिक महत्व के रूप में विशेष तौर पर समझा जा सकता है। यह लोकपर्व पाँचपरगाना क्षेत्र के साथ- साथ उड़ीसा तथा पश्चिम बंगाल के क्षेत्रों में भी धूमधाम से मनाया जाता है। टुसू लोकपर्व विभिन्न समुदायों के ऐतिहासिक सम्बंधों का भी उदाहरण है। इससे जुड़ी लोककथा उन सम्बंधों के बारे में प्रमाण प्रस्तुत करती है। कालांतर में आधुनिकीकरण का प्रभाव, तकनीकी विकास, सांस्कृतिक सम्पर्क तथा अन्य कारणों से पहले की अपेक्षा कई तरह के परिवर्तन देखने को मिलते हैं। वर्त्तमान संदर्भ में इस विषय के उपर अध्ययन की बात कि जाय तो कई विद्वानों ने टुसू लोकपर्व के अलग-अलग आयामों पर अध्ययन किया है। इनमें से विशेषकर लोककथा तथा लोकगीत पर ही ध्यान केंद्रित किया गया है। महतो, परमानंद की पुस्तक *पूस-पीठा* (2010) में आठ कहानियों का संग्रह मिलता है। इस पुस्तक की तीसरी कहानी पुस-पीठा है जिसमें पाँचपरगाना क्षेत्र के लोगों के जीवन में पूस पर्व अर्थात टुसू पर्व के महत्व को दर्शाया गया है। सिंह, राजकिशोर की पुस्तक *तुलसी-चउरा* (2015) में पाँचपरगनिया

निबंध के रूप में अघन संक्राति सम्बंधित तथ्यों का उल्लेख मिलता है। इसके साथ-साथ अन्य साहित्यों के अध्ययनों की समीक्षा भी आगे की गई है जिसके आधार पर टुसू लोकपर्व के अद्यतन स्थिति परिलक्षित होती है।

उपरोक्त अध्ययनों की समीक्षा से यह ज्ञात होता है कि टुसू लोकपर्व पर सीमित क्षेत्रों या आयामों में अध्ययन किया गया है जो साहित्य के रूप में संरक्षित करने के लिए पर्याप्त नहीं है। इस लोकपर्व की सभी आयाम में अध्ययन की कमी है।

पूर्व अध्ययनों की समीक्षा

1. महतो, परमानंद की पुस्तक *पूस-पीठा* जिसका प्रकाशन प्रणेता प्रकाशन राँची द्वारा जून 2010 को किया गया है। यह पुस्तक एक कहानी संग्रह है जिसमें आठ कहानियाँ है। इस पुस्तक की तीसरी कहानी पुस-पीठा है जिसमें पाँचपरगना क्षेत्र के लोगों के जीवन में पूस पर्व। टुसू पर्व के महत्व को दर्शाया गया है।

2. सिंह, राजकिशोर की पुस्तक *तुलसी-चउरा* जिसका प्रकाशन झारखण्ड झरोखा द्वारा 2015 को किया गया है। यह पुस्तक पंचपरगनिया निबंध है जिसमें अगहन संक्राति संबंधित तथ्य सम्मिलित है।

3. महतो, चन्द्रमोहन की पुस्तक *बुइध टमड़ा (पंचपरगनिया भाषा सहित्य)* जिसका प्रकाशन माहतअ प्रकाशन द्वारा 2013 में किया गया है। इस पुस्तक में पाँचपरगना क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषा पाँचपरगनिया भाषा से संबंधित तथ्य सम्मिलित है।

4. सिंह, डॉ. दिनेश प्रसाद द्वारा लिखित पुस्तक *पाँचपरगनिया लोक साहित्य*जिसका प्रकाशन प्रगतिशील प्रकाशन द्वारा 2022 में किया गया है। इस पुस्तक में पाँचपरगनिया लोकगीतों का स्वरूप, क्षेत्र-विस्तार, वर्गीकरण, विशेषताएँ से संबंधित तथ्य शामिल है।

5. स्वाँसी, अम्बिका द्वारा लिखित पुस्तक *पंचपरगनिया लोकगीत* जिसका प्रकाशन झारखण्ड झरोखा द्वारा 2015 में किया गया है। इस पुस्तक में पाँचपरगना क्षेत्र के विभिन्न लोकगीतों का संग्रह है।

6. सिंह, राजकिशोर द्वारा लिखित पुस्तक *इंजत (पंचपरगनिया उपन्यास)* जिसका प्रकाशन पंचपरगनिया भाषा विकास केन्द्रीय समिति बुण्डु द्वारा 2012 में किया गया है। इस उपन्यास में विशेष रूप से पाँचपरगना क्षेत्र एवं कला संस्कृति का उल्लेख किया गया है।

7. महतो, परमानन्द द्वारा लिखित पुस्तक "*जीवन पथेक फूल*" जिसका प्रकाशन जनजातीय भाषा अकादमी द्वारा 1990 में किया गया था। यह पुस्तक पंचपरगनिया गीत कविता संग्रह है जिसमें कुल 06 लेखक/कवियों का योगदान है। विशेष रूप से दीनबप्धु महतो द्वारा रचित कविता *पाँचपरगना* जिसमें पाँचपरगना क्षेत्र की सम्पूर्ण व्याख्या कविता के माध्यम से की गई है।

8. महतो, परमानन्द द्वारा लिखित पुस्तक *पंचपरगनिया लोककथा* जिसका प्रकाशन झारखण्ड झरोखा द्वारा 2021 में किया गया है। इस पुस्तक में पाँचपरगना क्षेत्र के पर्व त्योहार से संबंधित लोककथा शामिल है।

9. महतो, परमानन्द द्वारा लिखित पुस्तक *पंचपरगनिया लोकगीत* जिसका प्रकाशन झारखण्ड झरोखा द्वारा 2023 में किया गया है। इस पुस्तक में पाँचपरगना क्षेत्र से संबंधित सभी लोकगीतों का संग्रह है। विशेष रूप से पर्व-त्योहारों से संबंधित लोकगीत शामिल है।

10. महतो, परमाननद द्वारा लिखित पुस्तक *डायरीक एकटा पात* जिसका प्रकाशन झारखण्ड झरोखा द्वारा 2023 में किया गया है। यह एक पंचपरगनिया कहानी संग्रह है जिसमें कुल 11 कहानियों का संग्रह है। 11 कहानियों में से एक कहानी टुसू मेला है, जिसमें टुसू मेला में घटने वाली सच्ची घटना की व्याख्या की गई है।

11. महतो, फागुराम द्वारा लिखित पुस्तक *पंचपरगनिया भाषा शिक्षण एवं साहित्य* जिसका प्रकाशन शिवांगन पब्लिकेशन द्वारा 2011 में की गई है। इस पुस्तक में पंचपरगना क्षेत्र से संबंधित तथ्य है।

12. महतो, दीनबन्धु द्वारा लिखित पुस्तक *गइदेक भिनु-भिनु डाइर* जिसका प्रकाशन झारखण्ड झरोखा द्वारा 2012 में किया गया है। इस पुस्तक में पाँचपरगना क्षेत्र में बोली जाने वाली पंचपरगनिया भाषा साहित्य के उद्भव एवं विकास से संबंधित तथ्य है।

13. साहु, प्रीतम द्वारा लिखित पुस्तक *पलाश के फूल* जिसका प्रकाशन झारखण्ड झरोखा द्वारा 1985 में किया गया है। इस पुस्तक में पाँचपरगना क्षेत्र विशेष कर तमाड़ क्षेत्र के लोगों की स्थिति एवं यहाँ की स्थानीय बाजारों से संबंधित तथ्य है।

14. मुण्डा, एन्थोनी द्वारा लिखित पुस्तक *जीवन*-डहर जिसका प्रकाशन झारखण्ड झरोखा द्वारा 2017 में किया गया है। यह पुस्तक एक कविता संग्रह है जिसमें पाँचपरगना एक कविता है। इस कविता के माध्यम से पाँचपरगना क्षेत्र की स्थिति, सामाजिक सांस्कृतिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनैतिक स्थिति की व्याख्या की गई है ।

15. गौंझू, डॉ. गिरिधारी राम द्वारा लिखित पुस्तक *झारखण्ड का लोकसंगीत* जिसका प्रकाशन झारखण्ड झरोखा द्वारा 2015 में किया गया है। इस पुस्तक में झारखण्ड के परम्परागत लोकगीत, लोकनृत्य एवं वाद्ययंत्रो की व्याख्या की गई है। इन तथ्यों के आधार पर शोध विषय से संबंधित तथ्यों का संकलन किया जाएगा।

16. महतो, परमानन्द द्वारा लिखित पुस्तक *पंचपरगनिया भाषा* जिसका प्रकाशन जनजातीय भाषा अकादमी द्वारा 1990 में किया गया है। इस पुस्तक में पाँचपरगना क्षेत्र एवं यहाँ बोली जाने वाली पंचपरगनिया भाषा का उदभव, विकास, क्षेत्रविस्तार, भौगोलिक सीमा, बोलने वालों की संख्या अन्य भाषाओं का प्रभाव तथा व्याकरण से संबंधित तथ्य है।

17. सिंह, दिनेश प्रसाद द्वारा लिखित पुस्तक *पंचपरगनिया लोकगीतों में सौंदर्य-बोध* जिसका प्रकाशन द्वारा 2019 में किया गया है। इस पुस्तक में पंचपरनिया संस्कार गीत, पर्व-त्योहारों के गीत विविध गीतों का सौन्दर्य-बोध एवं सौन्दर्य बोध की विशेषताएँ, उपलब्धियों से संबंधित तथ्य है। विशेष रूप से पर्व त्योहार के लोकगीतों के आधार पर शोद्य-विषय से संबंधित तथ्यों का संकलन किया जाएगा।

18. पाण्डेय, गया द्वारा लिखित पुस्तक *मानवशास्त्रतीय अनुसंधान* जिसका प्रकाशन कन्सेप्ट पब्लिशिंग कम्पनी द्वारा 2006 में किया गया है। इस पुस्तक में क्षेत्र कार्य विभिन्न मानवशास्त्रीय दृष्टिकोण, अनुसंधान की विधियाँ एवं तकनीक से संबंधित तथ्य है।

19. कुमार, निरंजन द्वारा लिखित पुस्तक *शोध प्रविधि* जिसका प्रकाशन झारखण्ड झरोखा द्वारा 2016 में किया गया है। इस पुस्तक में शोध का परिचय, प्राकल्पना, अवलोकन साक्षात्कार विधि से संबंधित तथ्य है। इन तथ्यों का प्रयोग कर शोध विषय से संबंधित तथ्यों का संकलन किया जाएगा।

20. गणेशन, एस.एन. द्वारा लिखित पुस्तक *अनुसंधान प्रविधि सिद्धांत और प्रक्रिया* जिसका प्रकाशन लोकभारती प्रकाशन द्वारा 2019 में किया गया है। इस पुस्तक में अनुसंधान से संबंधित सम्पूर्ण विवरण है।

21. अरोड़ा, हरीश द्वारा लिखित पुस्तक *शोध प्रविधि और प्रक्रिया* जिसका प्रकाशन के.के. पब्लिकेशन्स द्वारा 2016 में किया गया है। इस पुस्तक में शोध का स्वरूप, प्रकार, प्रक्रिया, हिन्दी शोध का इतिहास संबंधित तथ्य है।

22. पाण्डेय, गया द्वारा लिखित पुस्तक *झारखण्ड की जनजातियाँ एवं उनकी संस्कृति* जिसका प्रकाशन क्राउन पब्लिकेशन्स द्वारा 2019 में किया गया है। इस पुस्तक में शोध विषय से संबंधित जनजातिय झारखण्ड के पर्व त्योहार, जनजातीय झारखण्ड का लोक-साहित्य एवं कला के अन्तर्गत लोककथा, एवं लोकगीत के तथ्य शामिल है।

23. सिंह, एच.एन. द्वारा लिखित पुस्तक *कुरमाली लोकसाहित्य* जिसका प्रकाशन झारखण्ड जनजातीय कल्याण शोध संस्थान द्वारा 2012 में किया गया है। इस पुस्तक में टुसू एवं अन्य पर्व त्योहारों से संबंधित तथ्य शामिल है।

24. महतो, वृद्धावन द्वारा लिखित पुस्तक *कुरमाली लोकगीत* जिसका प्रकाशन प्यारा केरकेट्टा फाउण्डेशन द्वारा 2009 में किया गया हा। इस पुस्तक में पर्व त्योहारों से संबंधित कुरमाली लोकगीत शामिल है।

25. प्रमाणिक, मंजय द्वारा लिखित पुस्तक *खाँटी कुरमाली* जिसका प्रकाशन शिवांगन पब्लिकेशन द्वारा 2022 में किया गया है। इस पुस्तक में पर्व त्योहार से संबंधित कुरमाली लोकगीत शामिल है।

26. सिंह, एच.एन. द्वारा लिखित पुस्तक *कुरमाली के लोकगीत* जिसका प्रकाशन इंस्टिच्युट फॉर सोशन डेवलपमेंट एण्ड रिसर्च द्वारा 2022 में किया गया है। इस पुस्तक में उद्देश्यपूर्ण तथ्य के रूप में पर्व त्योहार से संबंधित कुरमाली लोकगीत शामिल है।

27. पाण्डेय, गया की पुस्तक मानवशास्त्रीय सिद्धांत शास्त्रीय एवं आधुनिक, जिसका प्रकाशन कन्सेप्ट पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली द्वारा 2007 में किया है। इस पुस्तक में विभिन्न मानवशास्त्रियों द्वारा दिए गए अवधारणाओं का संग्रह है।

28. मुण्डा, सोमा सिंह की पुस्तक *मुण्डा* जिसका प्रकाशन डॉ. रामदयाल मुण्डा जनजातीय कल्याण शोध संस्थान, मोराबादी, राँची द्वारा 2020 में किया गया है। इस पुस्तक में मुण्डाओं के पर्व त्योहार व मुण्डा जनजाति में सामाजिक परिवर्तनके प्रमुख कारण से सम्बन्धित तथ्य है।

29. अग्निहोत्री, विभा एवं शोभना नागर की पुस्तक *आनुवांशिकी एवं प्रजातिय मानवविज्ञान* जिसका प्रकाशन सत्यम शिंग हाउस नई दिल्ली द्वारा 2018 में किया गया है। इस पुस्तक में मानव पारिस्थितिकी के अन्तर्गत सांस्कृतिक पारिस्थितिकी विकासीय पारिस्थितिकी सम्बन्धित तथ्य मौजूद है।

30. कुमार, निरंजन की पुस्तक नृजाति विज्ञान जिसका प्रकाशन झारखण्ड झरोखा राँची द्वारा 2017 में किया गया है। इस पुस्तक में संस्कृति परिवर्तन के विभिन्न सिद्धांतों का उल्लेख किया गया है।

31. झा, प्रफुल्ल रंजन, दीपशिखा बरनवाल एवं राजकिशोर झा की पुस्तक *सामाजिक मानवशास्त्र* जिसका प्रकाशन पीयूष पब्लिकेशन दिल्ली द्वारा 2012 में किया गया है। इस पुस्तक में क्षेत्र कार्य की व्याख्या की गई है तथा विभिन्न मानवशास्त्रियों द्वारा किए गए कार्य का सविस्तार उल्लेख किया गया।

32. हसनैन, नदीम की पुस्तक *भारतीय मानव विज्ञान* जिसका प्रकाशन जवाहर पब्लिकेशन एवं डिस्ट्रीब्यूटर नई दिल्ली द्वारा 2016 में किया गया है। इस पुस्तक में भारत में सामाजिक परिवर्तन के विभिन्न आयामों का उल्लेख किया गया है।

33. अग्निहोत्री विभा, रश्मि शिक्षा एवं पूजा अग्रवाल की पुस्तक *मानवशास्त्र की उत्पति एवं इतिहास* जिसका प्रकाशन सत्यम पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली द्वारा 2021 में किया गया है। इस पुस्तक में सांस्कृतिक परिवर्तन की प्रक्रिया के सभी आयामों का सविस्तार व्याख्या किया गया है।

34. रावत, हरिकृष्ण की पुस्तक *मानवशास्त्रीय विचारक* जिसका प्रकाशन रावत पब्लिकेशन्स दिल्ली द्वारा 2003 में किया गया है । इस पुस्तक में मानवशास्त्रियों द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में दिए गए योगदान का सविस्तार व्याख्या किया गया है।

35. प्रसाद डॉ. हरि की पुस्तक *इण्टरमीडिएट मानव विज्ञान* जिसका प्रकाशन नूतन पब्लिकेशन रातू रोड राँची द्वारा 2008 में किया गया है । इस पुस्तक में जनजातियों की सामाजिक,सांस्कृतिक, आर्थिक स्थिति व उनमें आए परिवर्तनों की व्याख्या की गई है।

36. वर्मा, उमेश कुमार की पुस्तक *संथाल (संक्षिप्त मोनोग्राफिक सिरिज)* जिसका प्रकाशन झारखण्ड जनजातीय कल्याण शोध संस्थान, मोराबादी राँची द्वारा 2015 में किया गया है । इस पुस्तक में संथाल जनजाति की सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक आर्थिक, राजनीतिक स्थिति की सविस्तार चर्चा की गई है । विशेष रूप से संथाल जनजाति की पर्व त्योहार, जिसमें सकरात पर्व की भी चर्चा की गई है।

37. प्रेमचंद, मुंशी की पुस्तक *मानसरोवर* जिसका प्रकाशन ऑरिजिनल ब्लैक क्लासिकल आगरा द्वारा किया गया है। यह पुस्तक एक कहानी संग्रह है। जिसमें से एक कहानी पूस की रात है जिसमें पूस माह की पर्यावरणीय स्थिति की व्याख्या की गई है।

38. पाण्डेय, गया की पुस्तक *संप्रेषणात्मक मानवशास्त्र* जिसका प्रकाशन कान्सेप्ट पब्लिशिंग कम्पनी प्राइवेट लिमिटेड नई दिल्ली द्वारा 2015 में किया गया है । इस पुस्तक में सम्प्रेषण के अर्थ, परिभाषा भूमिका एवं प्रकार्य, स्वभाव एवं विशेषताएँ प्रकार, तकनीक, एवं साधन व्यवधान, क्षति, कौशल, माध्यम अभिकर्त, क्रांति, विकास व दृष्टिकोणों का सविस्तार व्याख्या की गई है।

39. केसरी विसेश्वर प्रसाद की पुस्तक *साहित्य के तत्व और आयाम* जिसका प्रकाशन झारखण्ड झरोखा राँची द्वारा 2013 में किया गया है । इस पुस्तक में काव्य, साहित्य एवं कला से सम्बन्धित तथ्यों का सविस्तार व्याख्या किया गया है।

40. रावत, हरिकृष्ण की पुस्तक *मानवशास्त्र विश्वकोष* जिसका प्रकाशन रावत पब्लिकेशन्स जयपुर द्वारा 2002 में किया गया है। इस पुस्तक में निरन्तरता, परिवर्तन, लोकसाहित्य जैसे अनेक मुख्य शब्दों का भावार्थ मौजूद है ।

उपरोक्त सभी समीक्षा में अंकित द्वितीयक आँकडों को आधार मानकर इस शोध विषय से सम्बंधित आँकडों का संकलन किया जाएगा। इस आधार पर द्वितीयक स्रोतों के मार्गदर्शन में शोध को पूर्ण रूप देने का प्रयास किया जाएगा।

समस्या की कथन

शोध विषय टुसू लोकपर्व लोकसाहित्य का अभिन्न अंग है । लोकसाहित्य दो शब्दों के मिलने से बना है लोक़साहित्य। जिसका अर्थ होता है अलिखित साहित्य हम कह सकते है कि टुसू लोकपर्व की रीति-रिवाज, परम्परा, प्रथा, कानून, लोकगीत, लोककथा, लोकगाथा सभी आदिकाल से अलिखित है। इनका लिखित

साहित्य का अभाव है। सभी सांस्कृतिक तत्व मौखिक रूप से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी हस्तांतरित होती आ रही है। इस शोधके माध्यम से टुसू लोकपर्व की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक महत्व एवं निरन्तरता के साथ-साथ उदविकासीय क्रम में इनमें आए सभी परिवर्तनएवं परिवर्तनके प्रमुख कारणों से सम्बन्धित तथ्यों का संकलन कर लिखित रूप प्रदान किया जाएगा।

अध्ययन की प्रासंगिकता

मेरा यह शोध इस मायने में महत्वपूर्व होगा कि पाँच परगना क्षेत्र के पर्व त्योहारों का मानवशास्त्रीय अध्ययनों का अभाव पाया गया है। साथ ही साथ शोध-विषय से सम्बंधित साहित्य (लिखित रूप) का भी अभाव है। तथ्य मौखिक रूप में अधिक है। यह शोध इस तथ्य को साहित्यिक रूप देने का प्रयास किया जाएगा। जिससे यहाँ की संस्कृति का अस्तित्व भविष्य में सुरक्षित रहे साथ ही साथ इनके परम्परागत (रीति रिवाज) पर्व-त्योहार मनाने की विधि में आए परिवर्तनों का भी अध्ययन किया जाएगा। यह परिवर्तन किन कारणों से हुआ तथा इसका जीवन पर क्या लाभ पड़ रहा है, इससे सम्बंधित गहन अध्ययन किया जाएगा।

शोध उद्देश्य एवं अभिप्रेरणा

1. पाँचपरगना क्षेत्र के प्रमुख लोक पर्व व टुसू पर्व की परम्परागत विधियों का अध्ययन करना।
2. पाँचपरगना क्षेत्र के लोकपर्व टुसू की महत्ता का अध्ययन करना।
3. पाँचपरगना क्षेत्र के लोकपर्व टुसू एवं मेलों के साथ राजनीतिक पहलुओं के अंत: सम्बंधों का अध्ययन करना।
4. पाँचपरगना क्षेत्र के लोकपर्व टुसू से सम्बंधित लोक कहानी का अध्ययन करना।
5. पाँचपरगना क्षेत्र के लोकपर्व टुसू से सम्बंधित लोकगीतों का अध्ययन करना।
6. पाँचपरगना क्षेत्र के लोकपर्व टुसू की लोकपरम्परा/परम्परागत रीति-रिवाज में आए परिवर्तनों एवं उनके प्रभावों का अध्ययन करना।

शोध प्रश्न

1. पाँचपरगना क्षेत्र के प्रमुख लोकपर्व क्या-क्या है तथा इन लोकपर्व को मनाने के उद्देश्य एवं परम्परागत विधियाँ क्या हैं ?
2. पाँचपरगना क्षेत्र के लोकपर्व टुसू का लोगों के जीवन में क्या महत्व है ?
3. पाँचपरगना क्षेत्र के लोकपर्व टुसू में कौन-कौन मेले आयोजित होते हैं तथा इनमें राजनीतिक संगठनों की क्या भूमिका है ? साथ ही साथ मेला व राजनीतिक पहलुओं के बीच अंत: सम्बंध क्या हैं ?
4. पाँचपरगना क्षेत्र के लोकपर्व टुसू से सम्बंधित कौन-कौन सी लोक कहानियाँ प्रचलित हैं।
5. पाँचपरगना क्षेत्र के लोकपर्व टुसू से सम्बंधित प्रमुख लोकगीत क्या-क्या हैं ?
6. पाँचपरगना क्षेत्र के लोकपर्व टुसू में आए परिवर्तन एवं परिवर्तन के प्रमुख कारक क्या है ? तथा इन परिवर्तनों का जनजीवन पर क्या प्रभाव पड़ा है ?

शोध प्रारूप एवं विधि

मानवशास्त्रीय शोध में शोधकार्य हेतु विभिन्न तरह के शोध प्रारूपों का सहारा लिया जाता है। वर्त्तमान शोध विषय के उदेश्यों, स्वभाव तथा विशेषता को ध्यान में रखते हुये यहाँ पर वर्णनात्मक अनुसंधान प्रारूप का सहारा लिया गया है। इसके लिये शोध विधि के विभिन्न पहलुओं का विवरण निम्न्लिखित है:-

1. अध्ययन क्षेत्र का चुनाव

शोध विषय से सम्बंधित तथ्य संकलन हेतु अध्ययन क्षेत्र के रूप में पाँचपरगना क्षेत्र के तमाड़ के जानुमपीड़ी गाँव बुण्डु का हुमटा बारूहातु गाँव, बारेन्दा का बारेन्दा गाँव, राहे का होटलो गाँव ,सिल्ली का पोगडा गाँव का उद्देश्यपूर्ण ढंग से चयन किया जाएगा।

2. अध्ययन की इकाई

तथ्य संकलन हेतु उद्देश्यपूर्ण ढंग से चयनित गाँव के सभी व्यक्तियों को शामिल किया जाएगा। लोककहानी ,लोकगीत ,रीति-रिवाज ,इतिहास से सम्बंधित तथ्य संकलन के लिए सूचनादाता के रूप में विशेष रूप से वृद्ध पुरूष एवं महिलाओं को शामिल किया जाएगा। परिवर्तन व उनके प्रभाव से सम्बंधित तथ्य संकलन हेतु सूचनादाता से सभी आयु समूह (वृद्ध, वयस्क व बच्चे) के महिलाओं एवं पुरूषों को शामिल किया जाएगा।

3. नमूना/निदर्शन का आकार

तथ्य संकलन हेतु उद्देश्यपूर्ण ढंग से 200 चयनित परिवारों में से परिवर्तनों को शामिल किया जाएगा। जिसमें जानुमपीड़ी गाँव के 40 परिवार, हुमटा बारूहातु के 40, परिवार बारेन्दा गाँव के 40 परिवार, होटलो गाँव के 40 परिवार व पोगडा गाँव के 40 परिवारों को शामिल किया जाएगा।

तथ्य संकलन के तकनीक

शोध विषय से सम्बंधित तथ्यों की संकलन के लिए मानवशास्त्रीय शोध तकनीको का प्रयोग किया जाएगा। जिसमें प्राथमिक स्त्रोत व द्वितीय स्त्रोत सम्मिलित है।

1. प्राथमिक स्त्रोत

(क) अवलोकन

तथ्य संकलन के लिए क्षेत्र के सभी पर्व-त्योहारों के रीति-रिवाज में प्रत्यक्ष रूप से शामिल होकर सहभागी अवलोकन किया जाएगा। प्रतिबंधित क्षेत्र व रीति-रिवाजों में असहभागी अवलोकन द्वारा तथ्यों का संकलन किया जाएगा।

(ख) साक्षात्कार

व्यक्तिगत एवं सामूहिक साक्षात्कार द्वारा तथ्यों का संकलन किया जाएगा। विशेषकर महिलाओं व पुरूषों द्वारा सामूहिक साक्षात्कार एवं गाँव के मुखिया, सरपंच, ग्राम प्रधान, मानकी, पहान, धार्मिक विशेषज्ञ से व्यक्तिगत व सामूहिक साक्षात्कार द्वारा तथ्यों का संकलन किया जाएगा।

(ग) अनुसूची

शोध विषय से सम्बंधित सभी उपयोगी एवं महत्वपूर्ण प्रश्नों को उद्देश्यपूर्ण तरीके से क्रमबद्ध सूचनादाताओं से प्रश्न पुछ कर तथ्यों का संकलन किया जाएगा।

(घ) व्यक्तिक अध्ययन

शोध विषय से सम्बंधित जानकार व अनुभवी व्यक्तियों का व्यक्तिक अध्ययन किया जाएगा। विशेष कर धार्मिक विशेषज्ञों को सूचनादाता के रूप में शामिल किया जाएगा।

(ड़) जीवन इतिहास

शोध विषय से सम्बंधित अनुभवी सूचनादाता एवं इनके संरक्षण हेतु कार्यरत लोगों का जीवन बृतांत के रूप में चयनित किया जाएगा।

(च) वंशावली सारणी

शोध विषय से सम्बंधित तथ्यों के संकलन के लिए। वंशावली सारणी का प्रयोग किया जाएगा। पर्व-त्योहारों के उद्देश्य महत्व रीति-रिवाज लोक-कहानी लोकगीतों का विभिन्न पीढियों में इसकी क्या स्थिति रही होगी तथा परिवर्तन की शुरूआत कौन सी पीढी से हुई एवं उनका प्रभाव विभिन्न पीढ़ियों में क्या पड़ा ।

(छ) छायाचित्र

शोध विषय से सम्बंधित उद्देश्यपूर्ण तथ्यों का संकलन छायाचित्र तकनीक से किया जाएगा।

(ज) ऑडियो –विडियो

शोध विषय से सम्बंधित तथ्यों के संकलन हेतु ऑडियो तकनीकों का प्रयोग किया जाएगा। लोकगीत व लोककहानी को रिकार्ड कर अभिलेखित करने का प्रयास किया जाएगा। पर्व त्योहारों में प्रतिबंधित क्षेत्र मे संभव हो तो अन्य सूचनादाता के माध्यम से विडियों रिकार्ड कर तथ्य संकलन करने का प्रयास किया जाएगा।

2. द्वितीयक स्त्रोत

शोध विषय से सम्बंधित तथ्य संकलन के लिए द्वितीयक स्त्रोत के रूप में सम्बंधित पुस्तक शोध पत्र पत्रिकाएं, जनगणना रिपोटर्, शोध पत्र पत्रिकाएं, नक्शा, मानचित्र, इंन्टरनेट का प्रयोग किया जाएगा।

तथ्यों का विष्लेषण

शोध कार्य द्वारा संकलित तथ्यों को परिष्कृत कर उपयोगी बनाया जाएगा। उद्देश्यपूर्ण तथ्यों तथा गुणात्मक एवं परिणामात्मक तथ्यों का विश्लेषण सरल सांख्यिकी द्वारा किया जाएगा। साथ ही साथ तथ्यों का विश्लेषण वर्गीकरण, तालिका एवं चार्ट द्वारा स्पष्ट किया जाएगा।

अध्ययन का महत्व

प्रत्येक शोध अध्ययन का अपना विशेष महत्व होता है। इस शोध कार्य के माध्यम से पाँचपरगना क्षेत्र एवं यहाँ की सामाजिक, सांस्कृतिक-धार्मिक पहलुओं का अध्ययन पर्व-त्योहारों द्वारा किया जाएगा। पर्व-त्योहारों का लोकसाहित्यिक एवं साहित्यिक अध्ययन किया जाएगा। विशेष रूप से टुसू पर्व का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जाएगा। पर्व त्योहारों का गहन अध्ययन किया जाएगा।

इस अध्ययन के माध्यम से पाँचपरगना क्षेत्र के पर्व-त्योहारों से सम्बधित ज्ञान की खाई को कम करने का प्रयास किया जाएगा। इस क्षेत्र के लोगों को साहित्यिक के साथ-साथ पर्व-त्योहारों की स्थिति एवं उनमें आए

परिवर्तन से अवगत हो पाएगें जिससे अपनी संस्कृति के प्रति जागरूक होगें। यह शोध न केवल इस क्षेत्र के लिए वरन सरकार व विश्वविधालय में भी इसके तथ्य मौजूद होगें।

वर्त्तमान समस्या के संदर्भ में समाज में इसकी प्रासांगिकता

टुसू लोकपर्व के सांस्कृतिक तत्वों की निरन्तरता देखने को मिलती है परन्तु उनकी आरंभिक स्थिति एवं वर्तमान स्थिति में भिन्नता है। यह विविधता उदविकासीय क्रम में परिवर्तन को दर्शाता है। विस्थापन एकल परिवार, शहरीकरण, औद्योगीकरण, शिक्षा एवं रोजगार के लिए एक शहर से दूसरे शहरों में पलायन, बुजुर्गो के साथ युवाओं का ज्ञान-परम्परा की कमी, युवागृहों का ह्रास/अभाव, युवाओं द्वारा संस्कृति के प्रति उदासीनता, परसंस्कृतिग्रहण का अधिक प्रचलन अलिखित सांस्कृतिक-तत्व कई ऐसे कारक है जिसके कारण टुसू लोकपर्व की सांस्कृतिक महत्व एवं गुणों में ह्रास पाया गया है। मेरा यह शोध इस मायने में महत्वपूर्व होगा कि पाँच परगना क्षेत्र के पर्व त्योहारों का मानवशास्त्रीय अध्ययनों का अभाव पाया गया है। साथ ही साथ शोध-विषय से सम्बंधित साहित्य (लिखित रूप) का भी अभाव है। तथ्य मौखिक रूप में अधिक है। यह शोध इस तथ्य को साहित्यिक रूप देने का प्रयास किया जाएगा। जिससे यहाँ की संस्कृति का अस्तित्व भविष्य में सुरक्षित रहे साथ ही साथ इनके परम्परागत (रीति रिवाज) पर्व-त्योहार मनाने की विधि में आए परिवर्तनों का भी अध्ययन किया जाएगा। यह परिवर्तन किन कारणों से हुआ तथा इसका जीवन पर क्या प्रभाव पड़ रहा है, इससे सम्बंधित गहन अध्ययन किया जाएगा।

वर्त्तमान शोध कार्य के द्वारा सर्वप्रथम टुसू लोकपर्व के अलिखित साहित्य को लिखित दस्तावेज के रूप में संरक्षित करने का प्रयास किया जाएगा। शोध कार्य के दौरान युवाओं की सांस्कृतिक उदासीनता को दूर करने का प्रयास किया जाएगा। भविष्य में भावी पीढ़ी के लिए यह दस्तावेज सांस्कृतिक विरासत के रूप में संरक्षित किया जाएगा। साथ ही साथ टुसू लोकपर्व में आए परिवर्तनके कारकों द्वारा लोगों की पारस्पारिकता का अभाव को कम करने की कोशिश की जाएगी।

शोध ज्ञान में इसका योगदान

चूँकि टुसू लोकपर्व लोकसाहित्य का प्रमुख भाग है। जिसके कारण लिखित दस्तावेजों का पूर्णतः अभाव है। यह शोध टुसू लोकपर्व से सम्बन्धित सभी तथ्यों को लिखित दस्तावेज के रूप में संरक्षित करने का प्रयास किया जाएगा जो भावी पीढ़ी को सांस्कृतिक विरासत के रूप में प्राप्त होगा। युवा पीढ़ी व लोगों की उदासीनता के कारण इसकी सांस्कृतिक तत्वों में परिवर्तनआए है तथा कुछ सांस्कृतिक तत्व विलुप्त होने के कगार पर हैं इनको अस्तित्व में बनाए रखने का प्रयास किया जाएगा।

भविष्य के कार्य

मेरा यह शोध विषय सीमित क्षेत्र व सीमित समयावधि के लिए है। यह अध्ययन सीमित क्षेत्र पाँचपरगना क्षेत्र के लिए है। जबकि यह पर्व झारखण्ड के विभिन्न क्षेत्रों में मकर संक्रांति, कोल्हान क्षेत्र में टुसू पर्व, उत्तरी छोटानागपुर में संकरात, जम्मु एवं कश्मीर में शिशुर सेंकांत, पंजाब, हरियाणा में लोहड़ी, गुजरात में उत्तरायण, महाराष्ट्र में तिलगुड़, तमिलनाडु में पोंगल, पश्चिम बंगाल में पौष संक्रांति, असम में भोगाली बिहु, यु०पी० एवं बिहार में खिचड़ी। इन सभी क्षेत्रों में सांस्कृतिक तत्व, रीति-रिवाज, ज्ञान परम्परा, कला, संस्कृति में विविधता

पाई जाती है किन्तु सभी में यह पर्व मनाने का उद्देश्य में समानता देखने को मिलती है। भविष्य में भारत के विभिन्न क्षेत्र में समान उद्देश्य से मनाये जाने वाले लोकपर्व टुसू का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है। झारखण्ड जैसे एक ही राज्य में भी क्षेत्रीय विविधता के कारण टुसू लोकपर्व में विविधत पायी जाती है। इस विविधता की सांस्कृतिक परिस्थिति से सम्बन्धित अध्ययन किया जा सकता है।

संभावित अध्याय:

अध्याय 1 पाँचपरगना क्षेत्र का संक्षिप्त परिचय

अध्याय 2 पाँचपरगना क्षेत्र के प्रमुख पर्व-त्योहार एवं उनके परम्परागत रीति-रिवाज/विधियाँ

अध्याय 3 पाँचपरगना क्षेत्र के लोकपर्व टुसू का महत्व

अध्याय 4 पाँचपरगना क्षेत्र के प्रमुख टुसू मेला व मेला में राजनीतिक संगठनों की भूमिका

अध्याय 5 पाँचपरगना क्षेत्र के लोकपर्व टुसू से सम्बन्धित लोककथा

अध्याय 6 पाँचपरगना क्षेत्र के लोकपर्व टुसू सम्बन्धित लोकगीत

अध्याय 7 पाँचपरगना क्षेत्र के लोकपर्व टुसू की लोकपरम्परा में आये परिवर्तन एवं उनके प्रभाव

सारांश एवं निष्कर्ष

संकलित एवं परिष्कृत तथ्यों का विश्लेषण विभिन्न अध्यायों द्वारा प्रस्तुत करने के पश्चात् शोध कार्य के स्वभाव उद्देश्य शोध प्रविधि, तथा अध्यायों का संक्षिप्त वर्णन प्रस्तुत किया जाएगा साथ ही साथ प्रत्येक अध्यायों के सारांश के साथ-साथ निष्कर्ष आकर्षक सुस्पष्ट तथा आंकडों द्वारा प्रस्तुत किया जाएगा।

परिशिष्ट

(1) केस अध्ययन

(2) जीवन वृतांत

(3) वंशावली सारणी

(4) अनुसूची

(5) छायाचित्र

(6) मुख्य सूचनादाताओं की सूची

(7) सूचानादाताओं की सूची

(8) स्थानीय शब्दावली

संदर्भ सूची

1. अग्निहोत्री, विभा एवं शोभना नागर, 2018: आनुवंशिकीय एवं प्रजातीय मानवविज्ञान सत्यम पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
2. अग्निहोत्री, विभा, रश्मि शिक्षा एवं पूजा अग्रवाल, 2021: मानवशास्त्र की उत्पति एवं इतिहास, सत्यम पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
3. अरोड़ा, हरीश, 2016: शोध प्रतिधि और प्रक्रिया, के. के. पब्लिकेशन्स, दिल्ली।

4. कुमार, निरंजन, 2016: शोध प्रविधि, झारखण्ड झरोखा, राँची।
5. कुमार, निरंजन, 2017: नृजाति विज्ञान, झारखण्ड झरोखा, राँची।
6. केसरी, विसेश्वर प्रसाद, 2013: साहित्य के तत्व और आयाम, झारखण्ड झरोखा, राँची।
7. गणेशन, एस एन, 2019: अनुसंधान प्रतिधि सिद्धांत और प्रक्रिया, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
8. गौंझू डॉ. गिरधारी राम, 2015: झारखण्ड का लोकसंगीत, झारखण्ड, राँची।
9. झा, प्रफुल्ल रंजन, दीपशिखा बरनवाल एवं राजकिशोर झा, 2012: सामाजिक मानवशास्त्र, पीयूष पब्लिकेशन्स, दिल्ली।
10. पाण्डेय, गया, 2006: मानवशास्त्रीय अनुसंधान, कन्सेप्ट पबिलशिंग कम्पनी, दिल्ली।
11. पाण्डेय, गया, 2007: मानवशास्त्रीय सिद्धांत शास्त्रीय एवं आधुनिक, कान्सेप्ट पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली।
12. पाण्डेय, गया, 2015: संप्रेषणात्मक मानवशास्त्र, कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कम्पनी प्राइवेट लिमिटेड नई दिल्ली।
13. पाण्डेय, गया, 2019: झारखण्ड की जनजातियाँ एवं उनकी संस्कृति, क्राउन पब्लिकेशन, राँची। रांची
14. प्रमाणिक, मंजय 2022: खाँटी कुरमाली, शिवांगन पब्लिकेशन, राँची कुरमाली, शिवांगन प्रब्लिकेशन, राँची।
15. प्रसाद डॉ. हरि 2008: इण्टरमीडिएट मानव विज्ञान, नूतन पब्लिकेशन, रातु रोड राँची।
16. प्रेमचन्द: मुंशी: मानसरोवर, ऑरिजिनल ब्लैक क्लासिक्स, आगरा।
17. महतो, चन्द्रमोहनः2013: बुइ्ध टमडा (पंचपरगनिया भाषा साहित्य), माहतअ प्रकाशक, राँची।
18. महतो, दीनबन्धु, 2012: गइदेक भिनु-भिनु डायर, झारखण्ड झरोखा, राँची।
19. महतो, परमानन्द, 2010: फूस-पीठा, प्रणेता प्रकाशन, राँची।
20. महतो, परमानन्द 1990: जीवन पथेक फूल जनजातीय भाषा अकादमी, राँची।
21. महतो, परमानन्द 1990: पंचपरगानिया भाषा, जनजातीया भाषा अकादमी, राँची।
22. महतो, परमानन्द 2021: पंचपरगानिया लोककथा, झारखण्ड झरोखा, राँची।
23. महतो, परमानन्द 2023: शयरीक एकता पात, झारखण्ड झरोखा, राँची।
24. महतो, परमानन्द, 2023: पंचपरगनिया लोकगीत, झारखण्ड झरोखा, राँची।
25. महतो, फागुराम 2011: पंचपरगानिया भाषा शिक्षण एवं साहित्य, शिवांगन पब्लिकेशन, राँची।
26. महतो, वृन्दावन, 2009: कुरमाली लोकगीत, प्यारा केरकेट्टा फाउण्डेशन, राँची।
27. मुण्डा, एन्थोनी 2017: जीवन डहर, झारखण्ड झरोखा, राँची।
28. मुण्डा, सोमा सिंह, 2020: मुण्डा,डॉ. रामदयाल मुण्डा जनजातीय कल्याण शोध संस्थान, मोराबादी, राँची।
29. रावत, हरिकृष्ण, 2002: मानवशास्त्र विश्वकोष, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर।
30. रावत, हरिकृष्ण, 2003: मानवशास्त्रीय विचारक, रावत पब्लिकेशन्स, दिल्ली।
31. वर्मा, उमेश कुमार, 2015 संथाल (संक्षिप्त मोनोग्राफिक सिरिथ), झारखण्ड जनजातीय कल्याण शोध संस्थान, मोराबादी राँची।
32. स्वासी, अम्बिका झारखण्ड 2015: पंचपरगनिया लोकगीत, झारखण्ड झरोखा राँची।
33. साहु, प्रीतम 1985: पलाश के फुल, झारखण्ड झरोखा, राँची।
34. सिंह, एच. एन 2012: कुरमाली लोकसाहित्य, झारखण्ड जनजातीय कल्याण शोध संस्थान, राँची

35. सिंह एच एन, 2022: कुरमाली के लोकगीत, इस्टिच्यूट फॉर सोशल डेवलपमेन्ट एण्ड रिसर्च, राँची।
36. सिंह, दिनेश प्रसाद, 2022: पंचपरगनिया लोक साहित्य, प्रगतिशील प्रकाशन, राँची।
37. सिंह, दिनेश प्रसाद, 2019: पंचपरगनिया लोकगीतों में सौन्दर्य-बोध, प्रगतिशील प्रकाशन, राँची।
38. सिंह, राजकिशोर, 2012: इँजत (पंचपरगनिया उपन्यास),पंचपरगनिया भाषा विकास केन्द्रीय समिति,बुण्डु।
49. सिंह, राजकिशोर, 2015: तुलसी-चउरा, झारखण्ड झरोखा, राँची।
40. हसनैन, नदीम, 2016: भारतीय मानवविज्ञान, जवाहर पब्लिशर एवं डिस्ट्रीब्यूटर, नई दिल्ली।